10-6-2024

भारत की प्रमुख वनस्पतियां

वनस्पतियां - किसी एक निश्चित क्षेत्र में पाये जाने वाले वृक्षों, झाड़ियों, घास के मैदानों, लताओं एवं पौधों व उनकी विभिन्न प्रजातियों के समूह को वनस्पतियां कहते हैं।

वनस्पतियों के निर्धारक तत्व - वायुमण्डलीय दशाएं (तापमान, आर्द्रता, वर्षा की मात्ता), मृदा, ऊंचाई, पारिस्थितिकी ये सभी मिलकर किसी भी क्षेत्र विशेष की वनस्पतियों का निर्धारण करती हैं।

निश्चित अंग
प्रमुख वृक्ष, झाड़ियां
घास के मैदान
लताएं
पादप एवं जीवों
विभिन्न प्रजातियां
पश्चिमी घाट
→ प्रमुख वनस्पतियां
निर्धारक तत्व : तापमान
आर्द्रता
वर्षा की मात्रा
ऊंचाई, मृदा
परिस्थितिकी

वर्षा की मात्रा के आधार पर वनस्पतियों का वर्गीकरण

वर्षा की मात्रा	वन	प्रमुख वनस्पतियां
250 सेमी से अधिक	ऊष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन	महोगनी, एबोनी, बाँस, रबर, आबनूस, सिनकोना, रोजवुड
200 से 250 सेमी तक	ऊष्ण कटिबंधीय अर्द्ध सदाबहार वन	साइडर, होलक, कैल
100 से 200 सेमी तक	ऊष्ण कटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन	सागवान, टीक, शीशम, साल, चंदन, अर्जुन, शहतूत

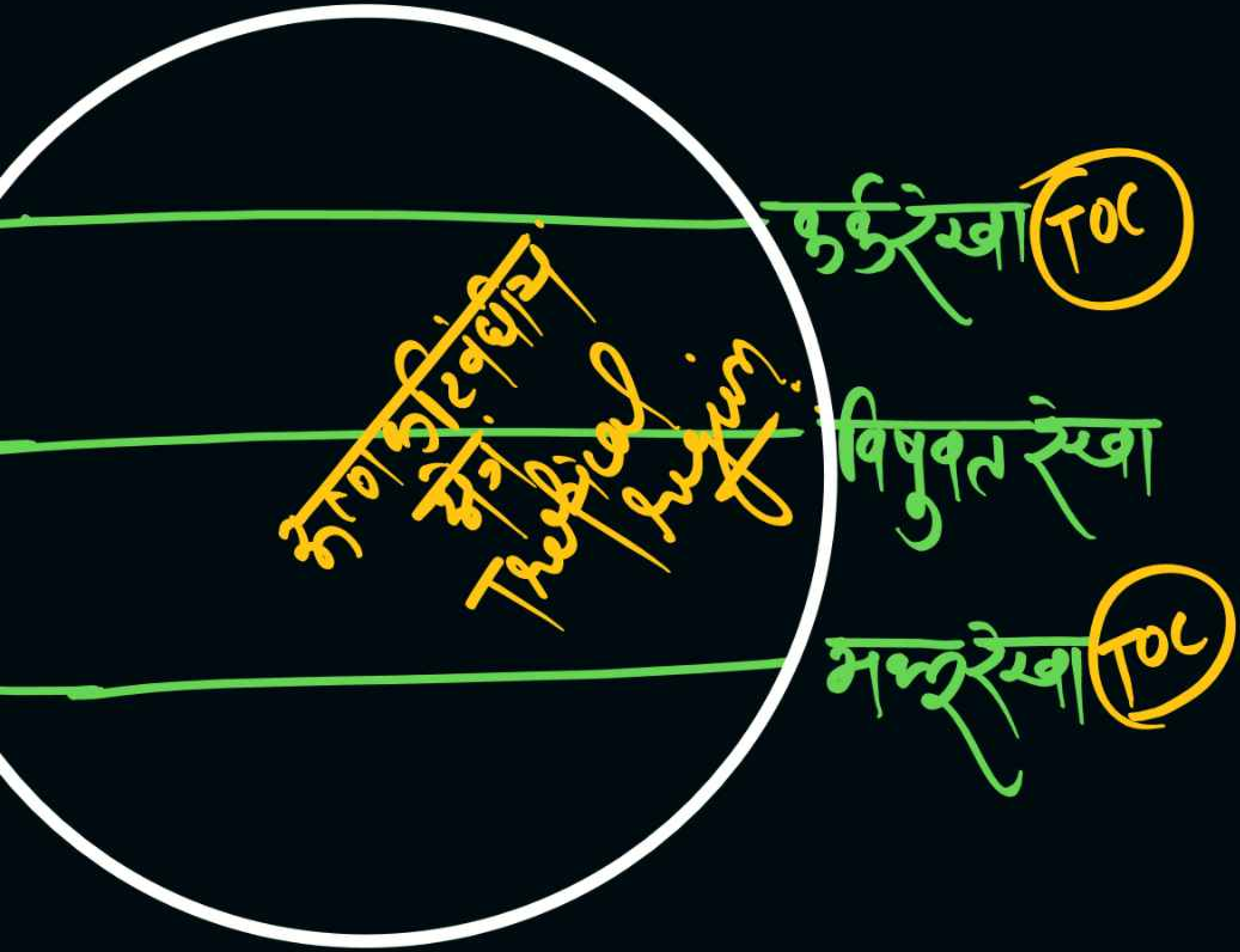
कर्क रेखा
TOC
विषुवत रेखा
मकर रेखा
TOC
उष्णकटिबंधीय क्षेत्र
Tropical region

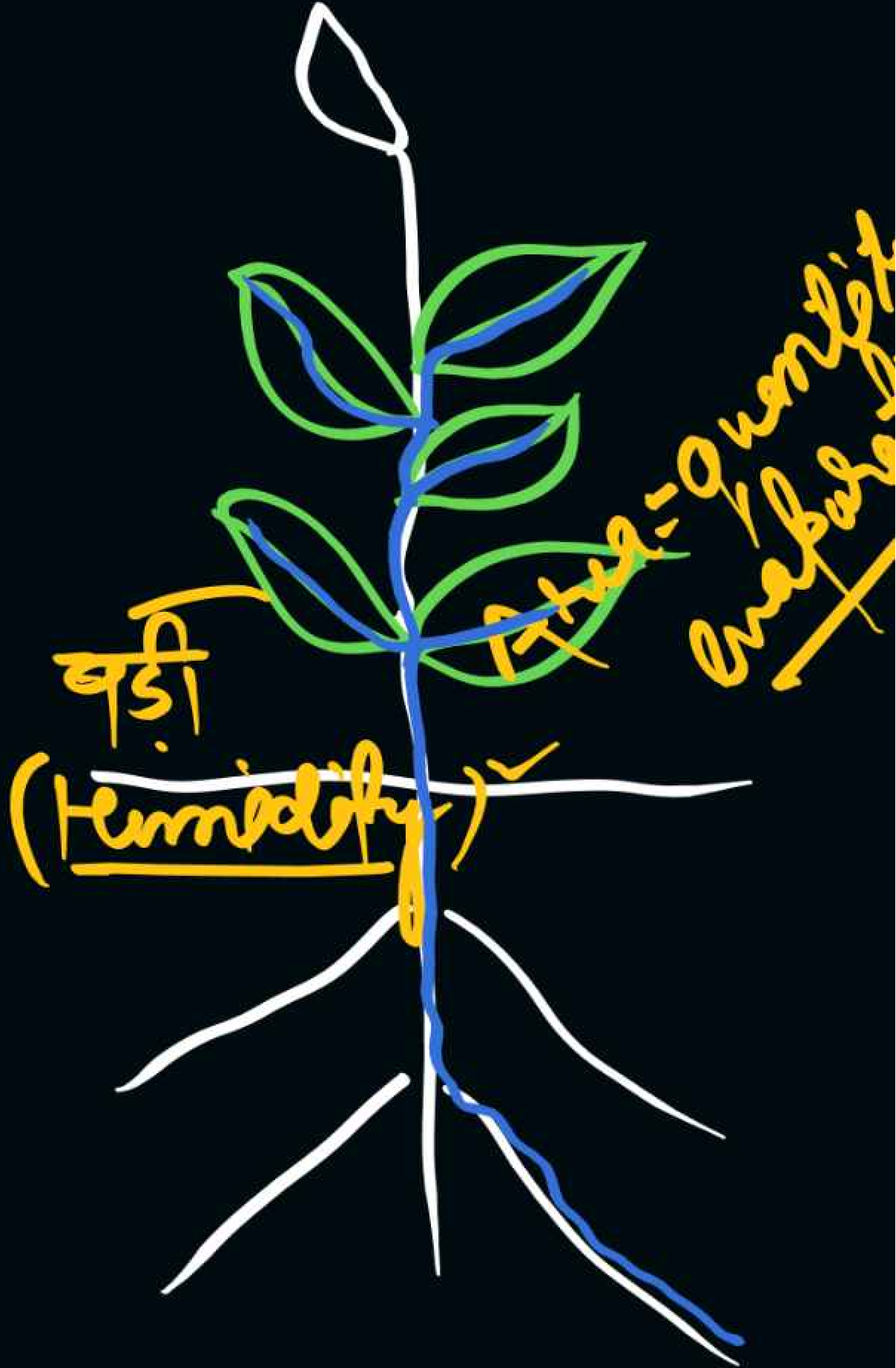
बढ़ी
(Humidity)

70 से 100 सेमी तक	शुष्क पर्णपाती वनस्पति सवाना वनस्पति	तेंदू, पलास, अमलतास, बेल, खेर, अक्सलवुड
70 सेमी से कम	शुष्क कटीली वनस्पतियां	नीम, खजूर, बबूल
40 से 60 सेमी तक	सवाना वनस्पति	छोटे वृक्ष एवं घास के क्षेत्र
50 सेमी से कम	मरुस्थलीय वनस्पति	आकासिया, नागफनी, कैकटस

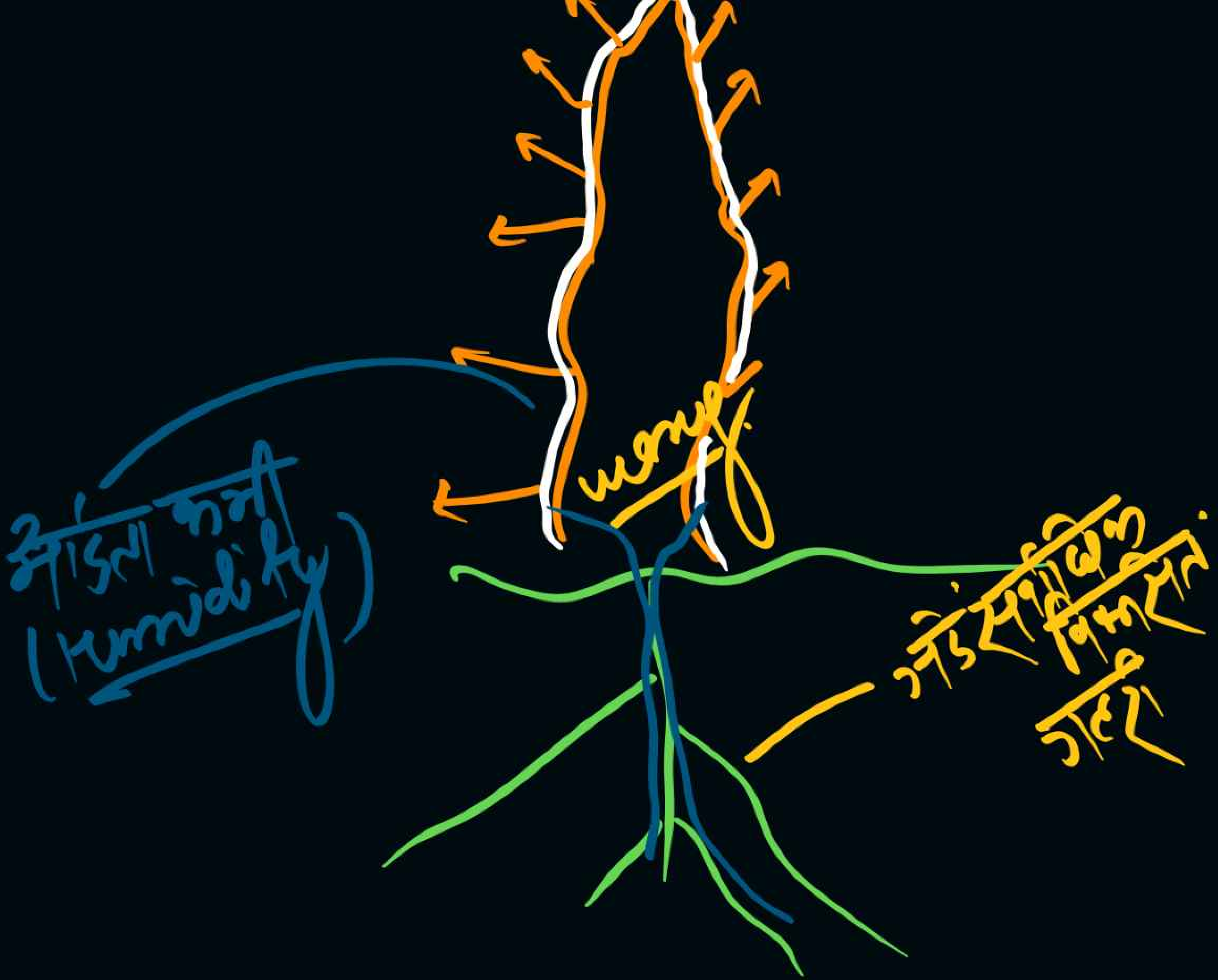
आर्द्रता कमी
(humidity)

Note-

ऊष्णकटिबंधीय सदाबहार वन -

⇒ इन पर साल भर पत्ते रहेंगे, ऊंचाई अधिक होगी।

⇒ इन वनों में जैव विविधता और सघनता बहुत अधिक होगी।

⇒ ये बहुस्तरीय / बहुमंजीला वन होते हैं।

⇒ यहाँ पर सर्वाधिक मात्रा में रेपटाइल्स देखने को मिलते हैं।

हिमालयी क्षेत्र की वनस्पतियों का वर्गीकरण

- जैसे-जैसे पूर्वी हिमालय से पश्चिम की ओर जायेंगें, वर्षा की मात्रा कम होती जायेगी।
- हिमालयी क्षेत्र की वनस्पतियो के विभाजन में ऊँचाई बहुत बड़ी भूमिका निभाती है।
- 900 मीटर की ऊंचाई तक तापमान की अपेक्षा वर्षा की मात्रा वनस्पतिमों के निर्धारणमें भूमिका निभाती है।
- पश्चिमी हिमालय में 1500 मीटर और पूर्वी हिमालय में 1800 मीटर की ऊंचाई सीमा निर्धारण का कार्य करती है।

तापमान के आधार पर vegetation निर्धारण

- 1500 मीटर तक की ऊंचाई पर ऊष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन देखने को मिलते हैं, यहाँ पर ओख एवं चेस्टनट के वृक्ष प्रमुखता से मिलते है।
- 1500 मी० के ऊपर 1750 मी० से लगभग 2000 मी. तक चीड़ के वृक्ष अधिक मात्रा में मिलते हैं।
- चीड़ का वृक्ष आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है, इस वृक्ष से लीसा निकाला जाता है, इसी लीसा से तारपीन का तेल बनता है।
- इसका उपयोग साबुन, पेंट, कागज उद्योग में किया जाता है।
- 2400 मी तक समशीतोष्ण आर्द्रपर्णपाती वनस्पति देखने को मिलती है।
- 2400 मी० से 3000 मी० तक भोजपत्र देवदार चीड, सिल्वर, फर और स्प्रूस जैसे वनस्पति देखने को मिलती है और यहाँ पर शंकुधारी वन मिलते हैं

Thank you